इस निश्चय से अवगत कराते समय मुझे अपनी उस विचार प्रक्रिया को भी विस्तारपूर्वक देशवासियों के समक्ष रखना चाहिए जिसने मुझे इस निर्णय पर पहुँचाया है। यह एक प्रकार से मेरे 20 अप्रैल 1978 के सूत्रमय वक्तव्य की व्याख्या मात्र होगी।

आज से 44 वर्ष पूर्व सन् 1934 में एक छात्र के रूप में मेरा जीवन सार्वजनिक कार्य से जुड़ा था। तब देश के वायुमंडल में स्वाधीनता आंदोलन के नारे गूँज रहे थे। भावुक युवा अन्तःकरण में देश की स्वाधीनता के लिए छटपटाहट सर्वव्यापी थी। स्वाधीन भारत के कितने ही उदात्त और आकर्षक सपने उस संघर्ष युग की युवा आँखों में तैर रहे थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के 31 वर्ष पश्चात् जब मैं स्वाधीन भारत के वर्तमान दृश्य पर दृष्टिपात करता हूँ तो मन में सहसा ही यह प्रश्न खड़ा हो जाता है कि क्या स्वाधीन भारत का यही चित्र है जिसका निर्माण करने के लिए देश ने अनेक पीढ़ियों तक स्वाधीनता के लिए लम्बी और विकट लड़ाई लड़ी थी? दयानन्द-विवेकानन्द से लेकर गाँधी तक, और लोकमान्य तिलक से लेकर नेताजी सुभाष बोस तक महापुरुषों की वह मालिका, जिसने हमारे स्वाधीनता संग्राम का जीवन-दर्शन गढ़ा, उसके लिए त्याग और बलिदान की नींव तैयार की और अन्ततः उसे सफलता प्राप्त करा दी, यदि स्वाधीन भारत में एकाएक अवतरित हो जाए तो आज का दृश्य देखकर उन्हें कैसा लगेगा? इस दृश्य में उन्हें अपने सपनों की पूर्ति दीखेगी अथवा समाधि?

स्वाधीनता की लड़ाई क्यों?

इन प्रश्नों की भूलभुलैया में उलझकर जब मैं स्वाधीनता आन्दोलन की मूल प्रेरणाओं को टटोलने की कोशिश करता हूँ तो निम्न सूत्र मेरी पकड़ में आते हैं : —

1. स्वाधीनता की हमारी लड़ाई केवल राजनीतिक लड़ाई नहीं थी जिसका लक्ष्य राजसत्ता को विदेशी हाथों से छीनकर देशी हाथों को सौंपने तक सीमित हो, अपितु यह दो सभ्यताओं का संघर्ष था, सच्चे अर्थों में एक सांस्कृतिक युद्ध था। भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की स्थापना के साथ ही पश्चिम में उपजी औद्योगिक सभ्यता का भी प्रवेश हुआ था और उन्नीसवीं शती की भारतीय मनीषा ने इसे सभ्यता की चुनौती के रूप में स्वीकार किया था। स्वाधीनता संग्राम के दार्शनिकों और अग्रणियों ने स्पष्ट शब्दों में घोषणा की थी कि भारत इस औद्योगिक सभ्यता की बाढ़ में प्रवाह पतित के समान कदापि नहीं बहेगा अपितु अपने पूर्वजों द्वारा प्रदत्त श्रेष्ठ जीवनदर्शन, वैज्ञानिक समाज रचना तथा अखंड अनुभव परंपरा के प्रकाश में अपनी मौलिक प्रतिभा से मानवीय मूल्यों पर आधारित तथा विज्ञान के आधुनिक आविष्कारों को ध्यान में रखकर युगानुकूल एक ऐसी नवीन सामाजिक एवं आर्थिक रचना खड़ी करेगा जो शेष विश्व के लिए भी अनुकरणीय बन सके। विवेकानन्द, अरविन्द, तिलक एवं गाँधी आदि मनीषियों ने बार-बार दोहराया था कि नियति द्वारा निर्धारित अपने इस जीवन लक्ष्य की पूर्ति के हेतु ही भारत स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रहा है। अतः भारत की स्वाधीनता केवल उसके अपने हित में नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है।

2. स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते हुए भी भारतीय मनीषा भावी समाज रचना के नियामक सिद्धान्तों व आदर्शों की खोज में लगी रही। गरीबी की रेखा के नीचे जी रहे कोटि-कोटि भारतवासियों को जीवन की न्यूनतम आवश्यकताएँ उपलब्ध कराते हुए उच्चतर जीवन की ओर बढ़ने की सुविधा प्रदान करना। शताब्दियों से चली आ रही सामाजिक और आर्थिक विषमता की खाई को पाटना। आधुनिक विज्ञान द्वारा प्रदत्त शरीर सुख के अनेक नये-नये उपकरणों का उपयोग करते हुए भी "**सादा जीवन उच्च विचार**" के सनातन आदर्श को सामने रखकर ही व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन स्तर का